जल अधिकार जीवन आधार

जनवरी से मार्च, 2021 अंक 1

सम्पादकीय

भारत में दिनोंदिन बढ़ता जल संकट एक विकराल समस्या बनती जा रही है। जिस प्रकार से भूजल का स्तर गिर रहा है वह आने वाले दिनों की सबसे बड़ी चुनौती है। कोविड के दौरान हम सबने देख ही लिया है कि भारत सहित पूरी दुनिया तब जगती है जब समस्या उसके सिर पर आकर खड़ी हो जाती है। जल संकट को लेकर पिछले कई वर्षों से लगातार बातें की जा रही हैं लेकिन जिस प्रकार की आवश्यकता है उस तरह से काम नहीं हो पा रहा है। वह दिन दूर नहीं है जब जल संकट को लेकर भी लॉकडाउन के दिन हमें देखने पड़ेंगे।

प्रतिवर्ष जिस तरह से जलस्तर गिर रहा है, उसके सापेक्ष हम जल प्रबंधन और संरक्षण की दिशा में न्यूनतम प्रयास कर रहे हैं, भारत दुनिया में सबसे अधिक भूगर्भीय जल का उपयोग करने वाला देश है और लगातार इस दिशा में आगे बढ़ रहा है। अर्थशास्त्र के सिद्धांत के अनुसार मांग और आपूर्ति के सिद्धांत के ऊपर जब तक काम नहीं किया जाएगा तब तक संकट का समाधान नही किया जा सकता।

समाज ने जल संरक्षण के काम की जिम्मेदारी सरकार के ऊपर मान ली है जबकि यह एक ऐसी समस्या है जिसको कोई भी सरकार जब तक खत्म नहीं कर सकती जब तक प्रत्येक व्यक्ति अपना दायित्व समझते हुए इस दिशा में आगे नहीं बढ़ेगा, यदि हम सुबह से लेकर शाम तक पानी का उपयोग करते हैं तो हमारा भी दायित्व बनता है कि इसके संरक्षण के लिए काम करें। हमारे लालची स्वभाव, अज्ञानता ने हमें इस तरह से ना तो सोचने देती है, ना ही करने देती है।

दुनिया के कई देशों ने अपने को जल संपन्न देश बनाने की दिशा में बहुत सार्थक प्रयास किए हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां पर खतरे की घंटी बज गई है, हर वर्ष देश के किसी ना किसी क्षेत्र में जल संकट देखने को मिलता है। एक तरफ हम ''हर घर नल से जल'' की तरफ बढ़ रहे हैं, दूसरी तरफ अपने तालाब और नदियों को खत्म करते जा रहे हैं, यह कैसा विकास और समझ है कि जब जल संरक्षण संरचना ही नष्ट हो जाएगी तो पानी कहां से आएगा। इसके समाधान के लिए गांव स्तर पर सामुदायिक जल सुरक्षा कार्ययोजना के प्रक्रिया के द्वारा जल संपन्न गांव बनाने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। जिसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

इसको ध्यान में रखते हुए जल जन जोड़ो अभियान, परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा व्यापक स्तर पर जल संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रयासों के परिणाम स्वरुप गांव स्तर पर एक सशक्त कैडर तैयार हुआ है, जिसे हम सब जल सहेली के नाम से जानते हैं जो अपने गांव को पानीदार बनाने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने इस बार के उत्तर प्रदेश पंचायत चुनाव में चुनाव लड़ कर गांव में जल संरक्षण के एजेंडे को प्रमुखता से उठाया यह बात अलग है की इस तरह के प्रयासों को सकारात्मक लोग तो सहयोग प्रदान करते हैं लेकिन सामंत वर्ग इस तरह के प्रयासों को हमेशा दबाने की कोशिश करता है, फिर भी कुछ गांव में जल सहेलियां चुनाव जीतकर आई और उन्होंने अपने पानी के मुददे को आगे बढ़ाया है।

निश्चित तौर से इस तरह के प्रयासों को समाज के सभी वर्गों का सहयोग मिलना चाहिए। जल के बिना जीवन की कल्पना करना भी व्यर्थ है। हमारी अपील है कि समाज के सभी लोग जल संरक्षण की दिशा में प्रभावी ढंग से अग्रसर हो वरना हम सबको आने वाले दिनों में बहुत अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

डॉ संजय सिंह

सचिव, परमार्थ समाज सेवी संस्थान

जल सहेलियों के अदभुत कार्य को पूरे देश को बताने की आवश्यकता :- मण्डलायुक्त, झांसी

परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा राजकीय संग्रहालय झांसी में जल सहेली सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मण्डलायुक्त, झांसी सुभाष चन्द्र शर्मा ने कहा कि आज जल सहेलियों के कार्यो के बारे में जानकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। जल सहेलियों के अदभुत कार्य को पूरे देश को जानना चाहिए। बुन्देलखण्ड में एक से बढकर एक जल सहेली है।

उन्होंने जल संरक्षण के बारे में बताते हुए कहा कि आज बरसात के पानी को भूर्गभ में पहुचाना बहुत आवश्यक हो गया है। इसके लिए पानी को जगह–जगह पर रोकना बहुत जरूरी है। हर घर में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग बनाकर जल को बचाया जा सकता है।

श्री शर्मा ने राजस्थान में जल संरक्षण को लेकर किये गये कार्य का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले राजस्थान में अत्यधिक मृदा क्षरण था। इसको रोकने के लिए वहां के समुदाय के साथ मिलकर घास के मैदानों का निर्माण किया गया, जिससे लोगो की आजीविका के संसाधन उपलब्ध हुये साथ ही मृदा क्षरण रूका है, इसी तरह बुन्देलखण्ड में जल संरक्षण के लिए छोटे–छोटे गढढे जल ग्रहण क्षेत्र के ऊपर एवं जहां पानी एकत्र हो रहा है वहां बडे बांधों का निर्माण किया जाये। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में महिलाओं की

भूमिका के लिए उन्होंने जल सहेलियों की भागीदारी का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि आप अभी इतना अच्छा काम कर रही है, अगर आप प्रधान, सदस्य बन जाये तो आपके गांव में जल संरक्षण के कार्य तो गुणवत्तापरक ढंग पूर्ण होगे ही साथ ही गांव में अन्य योजनाओं के क्रियान्वयन भी अच्छी तरह से किया जा सकता है।

उपायुक्त मनरेगा, झांसी रामअवतार सिंह ने जल सहेलियों के साथ मिलकर किये जा रहे नदी पुनर्जीवन के कार्यो के बारे में बताते हुए कहा कि बबीना विकासखण्ड में कनेरा नदी पर कार्य किया जा रहा है। जिसमें मनरेगा के अन्तर्गत 09 किलोमीटर में सिल्ट सफाई, 8 चैकडैम का रिपेयरिंग एवं 2 नये चैकडेमों का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने सरकार एवं मनरेगा के द्वारा संचालित की जा रही योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जल सहेलियों के अनुभव से सीखकर भविष्य में जल संरक्षण के कार्य को आगे बढाया जा सकता है। उन्होंने श्रम पंजीयन कराये जाने पर जोर देते हुए कहा कि ऐसे परिवारों को 17 योजनाओं का लाभ स्वतः मिल जाता है।जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक संजय सिंह ने कहा कि जल सहेलियों ने गांव को पानीदार बनाया है तथा पानी को लेकर तमाम कार्ययोजना भी बनाई है। इन्होनें गांव में पानी स्वच्छता से लेकर सामाजिक सुरक्षा के मुददों पर कार्य किया है। पर्दा प्रथा से निकलकर किसी भी चीज की परवाह ना करते हुए काम किया है। जो मुहिम जल सहेलियों ने छेडी है, वह दिन दूर नहीं जब बुन्देलखण्ड के हर गांव में जल सहेली होगी।

बबीना विकासखण्ड के सिमरावारी गांव से आयी जल सहेली मीरा ने अपने कामों के बारे में बताते हुए कहा कि उनके द्वारा गांव स्तर पर लगातार जल संरक्षण किया गया है एवं पंचायत में जल संरक्षण कार्य के लिए प्रस्ताव दिये गये है।

ग्राम खजुराहा बुजुर्ग की मीरा ने बताया कि जल सहेली बनने से पहले मैने कुआं और मायका ही देखा था, अब मैं जल संरक्षण और पेयजल उपलब्धता के लिए प्रयासरत हूं। श्वेता पाण्डे ने कहा कि जल सहेलियों के द्वारा किये जा रहे प्रयास बेहतरीन है, आने वाली पीढियां उन्हें एक जल संरक्षण के योद्धा के रूप में जानेगी। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय की सहायक प्राचार्य श्वेता पाण्डे ने कहा कि संघर्ष से ही महिलाओं को पहचान मिलती है। जल सहेलियों के इन कार्यों से बुन्देलखण्ड को नई पहचान मिल रही है।

देश में सामूहिकता की अलख जगाते श्रमदान शिविर

भारत में जल संरचनाओं के निर्माण में श्रमदानों का एक बहुत पुराना इतिहास रहा है, पहले के जमाने में कई राज्य अपने राज्य को जल सम्पन्न बनाये रखने के लिए लगातार समुदाय के सहयोग से श्रमदान करवाते थे, जिससे गर्मी के दौरान सूखे की समस्या का सामना नहीं करना पडता था,
बुन्देलखण्ड एवं देश के अन्य इलाकों में इसके हजारों उदाहरण आज भी देखे जा सकते है।

लेकिन वर्तमान में अपनी पुराने इतिहास का झुठलाते हुए श्रमदान जैसे कार्य को भुला दिया गया, जिससे लोगों के मन में अपनी आस–पास की जल संरचनाओं को संरक्षित करने के बजाय अपनी स्वार्थपरता के लिए उनके विनाश की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। पुराने जमाने में श्रमदानों के माध्यम से जल संरचनाऐं बनायी गयी थी उन पर भी संकट आ गया।

जब भारत में कोरोना महामारी के कारण
लॉकडाउन लगा तो गांव का गरीब तबका जो अपनी आजीविका के लिए शहरों में पलायन कर अपना गुजर बसर करता था, उसे अपने–अपने गांव वापिस लौटना पडा। उस दौरान मीडिया रिर्पोटो के अनुसार बुन्देलखण्ड में लगभग 9 लाख से अधिक प्रवासी मजदूर वापिस आये। गांव में आये इन प्रवासी मजदूरों की आर्थिक सहायता के लिए सरकार के द्वारा मनरेगा के अन्तर्गत विभिन्न कार्य कराये गये लेकिन तब भी कई ऐसे परिवार थे जिनकों मनरेगा से कोई काम नहीं मिला था, वही कई परिवार ऐसे भी थे जिनको काम तो मिल गया था लेकिन उनकी तत्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए मनरेगा से मजदूरी का पैसा नही आ रहा था।

ऐसे में परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा लोगों के मन में श्रमदान के बारे में एक नव पहल जागृत की। प्रवासी मजदूरों को जल संरचनाओं पर 7 दिन काम करने के बदले उसे तत्कालिक सहायता के रूप में राशन की किट भेट के रूप में प्रदान की,

इसका परिणाम इतना सार्थक रहा कि कई गांव में खराब हो चुकी जल संरचनाओं को एक नया जीवन मिला, लोगों का जल संरचनाओं के प्रति अपनापन देखने को मिला वह एक आशा की किरण लेकर आया।

परमार्थ संस्था के द्वारा इस कार्य को विस्तार देने के लिए एक वृहद योजना का निर्माण किया गया जिसमें उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड, राजस्थान, बि. हार से कुल 8 जिलों का चयन कर श्रमदान शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में गांववासियों के द्व ारा अपनी जल संरचनाओं के पुनर्निर्माण के लिए भारी उत्साह देखने को मिला, यह उत्साह देखकर जो एक बात निकलकर आयी वह यह थी कि सरकार जल संकट के

निवारण के लिए करोड़ों रूपये पैसे खर्च कर दे लेकिन बिना सामुदायिक सहयोग के जल संकट को खत्म नहीं किया जा सकता। जिस तरह लोगों के द्वारा जनभागीदा. री से अपनी जल संरचनाओं को श्रमदान शिविरों के माध्यम से पुनर्जीवित किया गया वह बताता है कि आज भी अगर श्रमदान के लिए पहल की जाये तो लोगों के द्वारा लोगों के लिए जल का संरक्षण एवं सम्बर्द्धन किया जा सकता है। अभी तक 170 श्रमदान शिविरों को आयोजन किया जा चुका है, जिसमें लगभग 7212 परिवा. रो के द्वारा सहभागिता की गई है जिसमें

परिवारों की कुल 30 हजार के लगभग सदस्यों की संख्या है। संस्थान के द्वारा चलायी गई इस पहल के परिणाम हम सभी को आगे दिखायी देगे एवं हम जल सकंट मुक्त क्षेत्र के रूप में एक कदम और बढेगे।

महिलाओं के ऊपर हो रहे अत्याचारों का विरोध न करना महापाप :- डॉ0 कंचन जायसवाल

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन का प्रतीक है, 8 मार्च के दिन मनाये जाने वाले इस दिवस का उददेश्य भी

महिलाओं के अधिकारों का बढावा देना है। इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम कोरोना काल में महिलाओं के अग्रणीय योगदान को देखते हुए '' वुमेन इन लीडरशिपरू अचिविंग एन इक्वल फ्यूचर इन ए कोविड–19 वर्ल्ड" है। यह थीम कोविड–19 महामारी के दौरान स्वास्थ्य देखभाल श्रमिकों, इनोवेटर आदि के रूप में दुनिया भर में लड़कियों और महिलाओं के योगदान को रेखांकित करती है।

इस विशेष दिवस पर परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा राही वीरांगना सभागार में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कोरोना काल में विभिन्न माध्यमों से समाज में योगदान करने वाली महिलाओं की सहभागिता रही।

मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित राज्य महिला आयोग, उत्तर प्रदेश की सदस्य डॉ0 कंचन जायसवाल ने कहा कि पूरे विश्व में महिलाऐं नये क्षितिज पर पहुंच रहीं हैं, भारत में चाहे ग्रामीण परिवेश हो या शहरी परिवेश, महिलाऐं जागरूक हो होकर अपने अधिकारों के बारे में जान रही है और आगे बढ रही है। एक सभ्य समाज की स्थापना तभी हो सकती है जब महिला शिक्षित, जागरूक एवं स्वस्थ्य हो।

उन्होंने महिलाओं पर हो रहे शोषण के रोकथाम के लिए सरकार के द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया एवं कहा कि दुनिया में इससे बडा महापाप कोई नहीं है कि हम अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों का विरोध ना करे। शिक्षाविद् डॉ नीति शास्त्री ने कहा कि आज महिलाऐं कुरीतियों पर प्रहार कर रही है और आगे बढ रही है। नारी का मतलब सृष्टि के सृजनकर्ता के रूप में हुआ है, प्रकृति ने स्त्री का वह ताकत दी है जो किसी में नहीं है। आज की नारियां हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं।

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली दस महिलाओं पूनम गौतम, नीलम सांरगी, लगन लाक्षाकार, मीरा देवी, गीता देवी पिस्ता देवी, जय देवी, शोभा रायकवार, मीना देवी, रेखा देवी को परमार्थ स्वयंसिद्धा सम्मान से सम्मानित किया गया

विश्वव्यापी कोरोना महामारी के दौरान शहर से लेकर गांव तक हर स्तर पर महिलाओं ने योगदान देकर यह साबित किया है कि वह किसी से कम नहीं है। जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि नारी अब अबला नहीं है, वह सबला बन रही है। समाज में महिलाओं के प्रति सोच में लगातार बदलाव आ रहा है, विश्व में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहां महिलायें पुरुषों से आगे न हो। उन्होनें कोरोना काल एवं उत्तराखण्ड त्रासदी में महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को सराहना करते हुए महिलाओं का आव्हान किया कि वे चुनौतियां से घबरायें नहीं, बल्कि उनका डटकर सामना करें। उन्होनें कहा कि उत्तर प्रदेश में आसन्न पंचायत चुनावों में महिलाओं को आगे आकर अपने गांव में सुश. ासन हेतु कार्य करना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही पूर्व महापौर किरन राजू बुकसेलर ने कहा कि पुरानी संस्कृतियों को जीवित रख. कर ही महिलाओं को समाज में एक नया स्थान मिल सकता है। आधुनिकीकरण की होड में, आज हम अपनी पुरानी संस्कृति को भूलते जा रहे है। संयुक्त विकास आयुक्त झांसी मण्डल झांसी श्रीमती मिथलेश सचान ने कहा कि भारत की आधी आबादी आज देश में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है, बगैर आधी आबादी के योगदान समाज आगे नहीं बढ सकता। वरिष्ठ पत्रकार सोनिया पाण्डे ने कहा कि शक्ति का अभिप्राय नारी है, किन्तु कही ना कही पितृसत्तात्मक सोच के कारण ना. रियों का लगातार शारीरिक एवं मानसिक शोषण होता रहा है। आज महिलाऐं स्वयं खडी हो रही है एवं अपने अधिकारों के बारे में जान रही है। उन्होनें कहा कि परमा. र्थ के साथ कार्य कर रही जल सहेलियों ने स्वयं कार्य कर अपनी पहचान बनायी है।

शिक्षाविद् डॉ0 आर्या गुप्ता ने कहा कि पितृसत्तात्मक समाज में होने के बाद भी महिलाओं के द्वारा अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रोज नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में बुन्देलखण्ड की जल सहेलियां जो कार्य कर रही है वह बहुत महत्वपूर्ण है।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ कुन्ती हरिराम ने कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में समझ बनाकर अपने ऊपर हो रही नाइंसाफियों पर मुखर होकर विरोध करना चाहिए। वहीं चिकित्सक व कहानीकार डॉ. निधि अग्रवाल ने कहा कि कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में भी महिलाओं को अपनी उपस्थिति दर्ज करानी चाहिए ताकि उनके अन्दर की संवेदनायें समाज के सामने आ सके।

विश्व जल दिवस

लगातार बढ़ती वैश्विक आबादी और देशों में बढती आर्थिक विकास की दौड के कारण लगातार पानी का उपयोग बढ रहा है, कृषि एवं उद्योगों के लिए में बढती पानी की मांग से भूजल स्तर में लगातार गिरावट आ रही है, इस वर्ष विश्व जल दिवस पर वेल्यूइंग वाटर (पानी का महत्व) विषय पर पूरी दुनिया में एक अभियान के तौर एक

वैश्विक सार्वजनिक बातचीत को जोर दे रहा है, कि व्यक्ति पानी के महत्व कैसे समझ सकते है। परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा भी लोगों को ''वेल्यूइंग वाटर'' (पानी का महत्व) पर उनके कार्यों, विचारों और अनुभवों के माध्यम से लोगों में जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य स्तरीय जल संवाद का आयोजन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के गांधी सभागार में आयोजित किया गया।

विश्व जल दिवस पर जल के महत्व को दर्शाती पोस्टर प्रदर्शनी

ललित कला विभाग की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में चित्रकला एवं कोलाज/पोस्टर प्रदर्शनी के माध्यम से पानी के महत्व को कागज पर उकेरा गया, जिसमें प्रथम पुरूस्कार गजेन्द्र सिंह, मेघा कुशवाहा, द्वितीय रंजना सोलंकी, मेघना सचान तृतीय कल्पना प्रजापति, रश्मि कुशवाहा, सांत्वना, सना खलीदी आदि को दिया गया।

जल संवाद को मुख्य अतिथि के रुप में सम्बोधित करते हुए मुख्य वन संरक्षक बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र पी. पी. सिंह ने कहा कि जल संरक्षण हेतु पानी की एक –एक बूंद को बचाना होगा, पानी की प्रत्येक बूंद को बचाने के लिए नदियों एवं जल स्त्रोतों को साफ करना होगा। उन्होंनें कहा कि वन विभाग द्वारा बुन्देलखण्ड में सौ वाटरशेड का चिन्हाकंन कर जल संरक्षण का कार्य किया जायेगा। भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण राज्यमंत्री प्रदीप जैन आदित्य ने कहा कि विचार ब्रह्माण्ड की सबसे बडी ताकत है। अगर प्रत्येक व्यक्ति जल संरक्षण का विचार कर ले कि पानी को संरक्षित करना है तो यह कार्य अंस. भव नहीं है और बुन्देलखण्ड पुनः पानीदार बन जायेगा। इस अवसर पर कर्नल संबित साहू ने कहा कि हमारी लोक कथाओं, कहावतों, मुहावरों में पानी को हमेशा विशिष्ट दर्जा दिया गया है। वर्तमान में, हमने पानी को निम्न दर्जा दिया, जिसके कारण जल संकट पैदा हुआ है, हमें पुनः लोक परम्पराओं को जीवित करना होगा।

अपर विकास आयुक्त झांसी मण्डल मिथलेश सचान ने जल संरक्षण के लिए शपथ दिलाते हुए कहा कि अब हमें एक–एक बूंद को संचित करना होगा, राज्य सरकार के द्वारा पाइप लाइन बिछाकर घर–घर पानी पहुचानें का प्रयास किया जा रहा है लेकिन जब जमीन के नीचे जल ही नहीं तो घर पर नल से जल कैसे आयेगा।
बुन्देली लोक संस्कृति के जीवन्त ग्रंथालय एवं उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री हरगोविन्द कुशवाहा ने जल संरक्षण की उपयोगिता और जल का महत्व दर्शाते अने. कों बुन्देली गीत और कविताओं के माध्यम से जल सहे. लियों एवं प्रतिभागियों को जल संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने परमार्थ समाजसेवी संस्थान के सचिव डॉ. संजय सिंह के सम्मान में कहा कि आंसू जब सम्मानित होंगें, तब इनको याद किया जायेगा, जब जल संरक्षण का चर्चा होगा, संजय का नाम लिया जायेगा। उन्होंने गिरते जल स्तर का उदाहरण देते हुए कहा कि 1800 वर्ष पुराना कुआं, जो नागवंश का प्रमाण था, अब वह सूख चुका है।

जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि आने वाले दिनों में सबसे बडा संकट पानी का संकट है। आज से 9 साल बाद ही जल संकट की गम्भीर चुनौतियों का सामना हम सबको करना पडेगा, हमें सिर्फ वर्षा के पानी के 2 सेंटीमीटर पानी की आवश्यकता होती है, पर हमारा दुर्भाग्य है कि हम उस पानी को भी नहीं सहेज पाते है। उन्होनें भारत सरकार के ''कैच द रैन'' अभियान को गति देने पर जोर दिया। जल संवाद को सम्बोधित करते हुए मुन्ना तिवारी ने कहा कि विज्ञान आदमी का जीवन सरल तो कर सकता है, लेकिन सुधार नहीं कर सकता, अब हमें आध्यात्मिक विज्ञान की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति जल से ही बनी है। परमार्थ बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जल संरक्षण हेतु उल्लेखनीय कार्य कर रही है, जिसमें सभी की सहभागिता आवश्यक है।

इस अवसर पर जल सहेलियों के संघर्ष को दर्शाता 'पानी की जंग में हम सब संग में' नामक जल गीत, जर्मनी एवं आस्ट्रिया की वाटर बैंड टीम द्वारा रीलीज किया गया।

विश्व जल दिवस पर जल सहेली बनी समारोह की शान

विश्व जल दिवस के अवसर पर बुन्छेलखण्ड क्षेत्र में अपने–अपने गांव में उत्कृष्ट कार्य करने वाली जल सहेलियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में जल संरक्षण, संचयन जैसे गंभीर विषयों पर चर्चा की गई। परमार्थ द्वारा जल–जन जोड़ो आंदोलन से जुड़ी जल सहेलियां इस कार्यक्रम की शान रहीं। संस्थान द्वारा बुंदेलखंड जल सम्मान नामक पुस्तक जल सहेलियों के सम्मान में प्रकाशित की गई, इस पुस्तक में 10 जल सहेलियां जिन्होंने जल को बचाने के लिए अपने गांव में उत्कृश्ट कार्य किए है। जल सहेलियां स्वयं व गांव अन्य महिलाओं की मदद से श्रमदान कर कुएं, तालाब, हैण्डपम्प और चैकडैम खोद डाले। सूखे पड़े कुओं को गहरा करने का काम कर स्वयं से किया।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली रामवती, श्रीकुंवर, इमरती, रानी, मीरा, मीरा देवी, नीलम आदि जल सहेलियों को सम्मानित किया गया। जल सहेलियो द्वारा अपने जल संरक्षण के संघर्ष की दास्तां को भी साझा किया गया।

चूंकि पानी का संकट सबसे बड़ा संकट है। जल की एक–एक बूंद को बचाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। जिस तेजी से जल स्तर गिर रहा है। उसकी गंभीरता को समझकर संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है। इन जल सहेलियों ने इस संकट को झेला है। साथ ही साथ समाज की रीति–रिवाज से भी लड़ना पडा जो उन्हें बांधते थे। उन्होंने अपने–अपने गांव में मेहनत से आज वर्शा के जल एवं पानी की बर्बादी को रोककर, गांव के लोगों को जल साक्षर कर गांव को पानीदार बनाने की अग्रणीय भूमिका निभायी है।

बंजर जमीन अब उगलेगी सोना

मध्यप्रदेश के जिला टीकमगढ ब्लाक जतारा के तहसील मोहनगढ के ग्राम मस्तापुर के निवासी हरीकिशन के पास दो एकड बंजर जमीन थी। पिता जमना नापित के सात पुत्र हैं। बंजर जमीन होने के कारण आय का कोई साधन नही था जि. सके कारण तीन भाई तो आजीविका की तलाश में शहर पलायन कर गए। बाकि भाई नाई की दुकान चलाते थे। कोरोना काल में जब दुकान बिल्कुल बंद हो गयी आमदानी का कोई जरिया नही रहा तब हरीकिशन के द्व ारा आस–पडोस से कुछ पैसे उधार लेकर अपना खर्चा चलाया। इस दौरान परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्व ारा गांव में जल संरक्षण हेतु संरचनाऐं निर्मित करने हेतु स्थानों के चयन के लिए बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान पानी पंचायत के सदस्यों के द्वारा कोरा. ना काल के बाद गांव में उपजी आर्थिक स्थिति के बारे में बतलाया गया तथा साथ ही यह प्रस्ताव भी रखा कि अगर संस्था के द्वारा जल संरक्षण हेतु कोई संरचना गांव वालों के साथ निर्मित करा दी जाये तो लोगों को छोटी से आर्थिक सहायता हो जायेगी साथ ही जल संरक्षण का कार्य होगा। गांव में संरचना निर्माण के लिए हरीकिशन की बंजर पडी भूमि के चयन हेतु प्रस्ताव रखा गया कि हरीकिशन की खोरा वाली जमीन पर अर्दन बांध का निर्माण कराया जाए। जिसमें आस पास के जल स्त्रोतों में पानी का स्तर बढेगा। कोविड 19 परियोजना के अन्तर्गत हरीकिशन की निजी भूमि में अर्दन बांध का निर्माण कराया गया। जिसके चलते गांव के 50 संकटग्रस्त परिवारों को श्रमदान कार्य शिविर के माध्यम से आर्थिक मदद प्रदान की गई। इस पैसे से उन्होने अपने परिवारों की जरूरतमंद वस्तुओं को खरीदा। इस कार्य से सभी ग्रामवासी हरीकिशन व उनका परिवार बहुत खुश है।

हरीकिशन कहते है संरचना के निर्माण से उनकी बंजर जमीन में अब खेती हो सकेगी, जिससे परिवार का अच्छी तरह से भरण पोषण किया जा सकेगा, साथ ही गांव में भूजल सम्बर्द्धन के लिए भी यह संरचना उपयोगी साबित होगी।

मनरेगा से परमार्थ के प्रयासों से कनेरा नदी को मिलेगा नया जीवन

भारत को नदियों का देश कहा जाता है लेकिन मानव के लालची स्वभाव एवं लगातार होते जलवायु परिवर्तन के कारण पूरे देश की नदियां सूख चुकी है। अब बरसात मे ही वह नदियों की तरह अविरल दिखती हैं।

ऐसी ही एक नदी है कनेरा जो झांसी जिले के ब्लाक के मिलेट्री के चांदमारी के पहाडी क्षेत्र से निकलती है। यह नदी कई गावों से होते हुए 19 किलोमीटर यात्रा कर घुरारी नदी में मिलती है। बुन्देलखण्ड में पडे सूखे के कारण इसका भी जल प्रवाह रूक गया है। यह नदी बबीना से निकलकर करीब आधा दर्जन ग्राम पंचायतों से होते हुए जाती है। वर्ष 2018 परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा इस नदी के किनारे बसे गांव के लोगों की मदद से इस नदी को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया गया। जल जन जोडो के राष्ट्रीय संयोजक संजय सिंह ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर नदी को पुनर्जीवित करने का प्रयास अपने स्तर पर किया। इस विकासखंड में भूगर्भीय जल का स्तर बहुत नीचे है। यहां सिंचाई के संसाधनों का भी अभाव है। दो दशक पहले तक कनेरा नदी इन गांवों के लिए जल स्त्रोत का कार्य करती थी, लेकिन वर्तमान में गंदगी फैलने और देखभाल न होने के कारण यह अब नाले में तब्दील हो चुकी है। दो वर्षों के बाद जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर नदी पुनर्जीवित करने का अनूठा प्रयास शुरू हुआ।यही प्रयास पूरे देश में पुनर्जीवन के लिए एक प्रेरणीय उदा. हरण के रूप में माना जाएगा। यह काम मनरेगा द्वारा कराया जाएगा। मनरेगा उपायुक्त रामवतार के मुताबिक सर्वप्रथम सिल्ट जमने से पानी का प्रवाह कम हो गया थ। नदी की सिल्ट की सफाई का काम किया जाएगा। 44 लाख की लागत से यह काम बेतवा नहर प्रखंड के जरिए कराया जाएगा। 12.85 लाख रूपये से वन विभाग एवं 17.80 लाख रूपये से उद्यान विभाग नदी के किनारे हरित वाटिका विकसित करने का काम करेगी।

इसकी मदद से नदी के पाट की मिट्‌टी भी सुरक्षित की जा सकेगी। किसी जमाने मे इस नदी में करीब आध ाा दर्जन चैकडैम बनाए गए थे, जो वर्तमान में क्षतिग्रस्त हो गये थे, जिला प्रशासन के द्वारा इन चैकडेमों की जीर्णोद्धार एवं 4 अन्य चैकडैमों के निर्माण हेतु कार्ययोजना का निर्माण किया गया है। मनरेगा उपायुक्त के मुताबिक इसके जरिए न सिर्फ सालभर इन सब गांव में पानी उपलब्ध होगा बल्कि सिंचाई में भी किसानों को मदद मिलेगी।

कोविड काल में महिलाओं ने गांव को बनाया पानीदार

कोविड काल में शहरों से ज्यादा तो गांवों की स्थिति दयनीय थी। बुंदेलखण्ड जैसे पिछडे इलाके में जहां भोजन तो दूर पानी तक के लिए लोग तरस जाते हैं। गरीबी के कारण लोग बेहाल हो जाते है इससे बचने के लिए हमेशा बुन्देलखण्ड से लोग मजदूरी के लिए शहरों की ओर पलायन कर जाते थे लेकिन कोरोना काल में तो पलायन कर चुके किसान और मजदूर सब वापस आ गए थे। अब हालात बद से बदतर हो चुके थे। गांव में कई परिवार ऐसे थे जो दो वक्त की रोटी भी बमुश्किल जुटा पाते थे।

इस विकट परिस्थितियों के दौरान मध्य प्रदेश के जिला छतरपुर के ब्लाक बडामलहरा के तहसील घुवारा के ग्राम सेवार में महिलाओं ने अपनी मेहनत लगन से अविस्मरणीय काम कर दिखाया है। ग्राम सेवार की बदली तस्वीर का श्रेय महिला शक्ति को ही जाता है।

हमेशा गांव में पानी की किल्लत बनी रहती थी। संस्थान के द्वारा कोविड काल में ग्राम सेवार की ऐसी स्थिति पर महिलाओं के साथ जल संकट पर चर्चा की। ग्रामवासियों को जल संरक्षण व संचयन पर सचेत कर जागरूकता लाने का प्रयास किया। परिणाम स्वरूप सभी महिलाओं ने संस्थान के सहयोग से जल संरक्षण कर गांव की तस्वीर बदलने की ठान ली। कोरोना काल में महिलाओं ने एकजुट होकर तालाब को ठीक करने का काम शुरू कर किया। संस्थान ने ग्रामवासियों के इस श्रमदान के इस साहसिक कार्य को देखते हुए सभी के लिए राशन का इंतजाम करवाया। देखते ही देखते महिलाओं ने दो महिनों में इस तालाब को काफी हद तक ठीक कर लिया। भविष्य में उस तालाब के भर जाने से पूरे गांव में सिंचाई एंव पेयजल संकट दूर होगा। किसान अपना परिवार चलाने के लिए स्वयं की खेती पर निर्भर रहेंगे। महिलाओं ने जो टूटे पडे तालाब को ठीक किया। इससे आने वाले समय में किसान भरपूर खेती कर सकेंगे। साथ ही साथ वे तालाब में मछली पालन करके अपने परिवारों की आमदनी बढाएंगें। तालाब से लगभग 45 परिवारों को सिंचाई की सुविधा मिलेगी करीब 22 कुओं में जलस्तर बढेगा, हैण्डपम्प बोरवेल्स रिचार्ज होगे। गांव मे लगातार बढ रही पलायन की समस्या भी कम हो जाएगी। लोग अपने ही गांव मे रहकर खेती से जीवनयापन कर सकेंगे। वर्तमान में संस्था के द्वारा गांव में पोषण युक्त हरी सब्जी परिवारों को प्राप्त होती रही है इसके लिए किचिन गार्डन का रोपाण करवाया गया है, जिससे लोगों की पोषण की कमी को पूरा किया जा सके।

धसान नदी के अस्तित्व को बचाये रखने के लिए शुरू हुयी सामूहिक पहल

बुंदेलखण्ड की प्रमुख सहायक नदी धसान है। मध्यप्रदेश के रायसेन जिले से निकलने वाली यह नदी उत्तर प्रदेश के जिला ललितपुर के साथ मध्य प्रदेश की सीमा निर्धारित करती है। उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग द्वारा किये गए सर्वे के अनुसार धसान नदी 365 किमी का सफर तय करती है। साथ ही साथ 40 किमी तक कई झरने भी इस नदी से निकला करते थे। सिल्ट जमा होने के कारण यह अपनी मूलधारा से भटक चुकी है। इसके सूखने और राह से भटकने के कारण गांवों मे पेयजल और सिंचाई का संकट गहराने लगा है। परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा जिला विकास अधिकारी हमीरपुर, परियोजना निदेशक हमीरपुर, खंड विकास अधिकारी राठ की उपस्थिति में धसान नदी पुनर्जीवन विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया। परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने प्रभावित गांवों के लोगों को जोडकर नदी के पुनर्जीवन का अभियोन चलाकर नदी को बचाने का प्रयास किया।

सर्वप्रथम समस्त अधिकारियों ने मलहेटा ग्राम के घाट खरारा जाकर नदी का अवलोकन व वृक्षारोपण किया। गोष्ठी में परमार्थ सचिव संजय सिंह ने नदी की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जल धरोहर को बचाना कितना जरुरी है। उन्होंने पुनर्जीवन की योजना की विस्तृत जानकारी दी। उन्होने यह भी बताया कि नदी का उपचार किस प्रकार से किया जा सकता है। वहीं परियोजना निदेशक द्वारा प्रथम चरण में होने वाले कार्यों का रेखाकिंत किया। प्रथम चरण की प्रस्तावित कार्य परियोजना में मनरेगा वन विभाग सिंचाई विभाग के साथ कार्य पूर्ण होने का आश्वासन दिया। खंड विकास अधिकारी ने ग्रामीणों को पुनर्जीवन में रुचि देखते हुए सभी की बहुत प्रशंसा की। उन्होने मुख्यमंत्री समग्र ग्राम विकास मे इस गांव को जोडने का आश्वासन दिया। गांव के निवासी सत्यप्रकाश ने नदी में 20 वर्ष मे आए बदलाव बताए। एक अन्य गांववासी उदयभान ने बताया कि संसाधनों के अभाव में ग्रामीणों द्वारा सामूहिक तौर पर किए गए कार्यों के बारे में बताया। इस अवसर पर गांव के 600 से अधिक लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन मानवेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के बाद कछेछा घाट, कछार नाला, खरारा घाट पर आरएमएस पटटी, रपटा निर्माण, सिल्ट सफाई कर नदी को पुनर्जीवित किया जायेगा।

पंचायत चुनाव में मतदाताओं ने अच्छे एवं सच्चे प्रत्याशियों को चुनने की ली शपथ

उत्तर प्रदेश राज्य में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव होने वाला है जो ग्रामीण क्षेत्र एवं गाँव के लोकतंत्र का सबसे बड़ा चुनाव पर्व के रूप में जाना जाता है, 73 वे संविधान संशोधन पंचायतीराज अधिनियम के अनुसार यह चुनाव 5 वर्ष के अन्तराल में होता है। गांव के विकास में इस चुनाव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पंचायत चुनाव में मतदाता अपने गांव में अच्छे एवं सच्चे प्रत्याशियों को चुनें जिसके लिए परमार्थ संस्था के द्वारा जागो मतदाता पंचायत चुनाव अभियान झांसी एवं ललितपुर के 100 गांव में पहुंचा। यात्रा के दौरान गांव में भ्रमण कर मतदाताओं को जागरूक किया साथ ही पोस्टर चिपकाकर मतदाताओं से अपील की कि वे प्रत्याशियों के लोभ लुभावन वादों में ना आएं वोट उसी को दें जो ईमानदार और स्वच्छ छवि प्रत्याशी हो। संस्थान के द्वारा यह अभियान 15 फरवरी से 5 मार्च तक चलाया गया। जिसके माध्यम से 100 गावों में मतदाताओं को जागरूक किया गया। इस बार के पंचायत चुनाव में अच्छे एवं सच्चे प्रत्याशी चुने जाएं यही अभियान का उद्देश्य है। यात्रा का नेतृत्व करते हुए सुषमा देवी ने कहा कि पंचायत चुनाव में मतदाता अपने विवेक का इस्तेमाल करें। किसी प्रत्याशी के लोभ लालच में ना आएं और ना ही किसी से डर कर वोट डालें, गांव के विकास की राह में एक साथ चलने वाली महिलाओं को पंचायत चुनाव में आगे आकर अपने मतदान का उपयोग करना होगा, तभी योग्य और सच्चे मुखिया को चुनकर लाया जा सकता है। जो गांव में 5 साल ग्राम के विकास के साथ जल संरक्षण पेयजल स्वच्छता जैसे कार्यों को प्राथमिकता से कराएं।

जल सहेली रानी देवी ने कहा कि इस पंचायत चुनाव के लिए पानी पंचायत समिति अपना अलग से घोषणा पत्र तैयार कर रही है। जो भी सच्चा एवं अच्छा प्रत्याशी इस घोषणा पत्र को मानेगा सभी सदस्यों के द्वारा उसी प्रत्याशी को चुना जाएगा। चाइल्ड लाइन कोऑर्डिनेटर अमरदीप बमोनिया ने कहा कि जब मतदान की तिथि घोषित हो जाएगी तो प्रत्याशियों के द्वारा आपको पैसा साडी तथा अन्य सामान देने का प्रयास करेगे और वोट डालने के लिए कहेंगे। ऐसे प्रत्याशियों की बातों में ना आकर अच्छे प्रत्याशी का चयन करें। बालकदास ने जागरूकता गीतों के द्वारा मतदाताओं को जागरूक किया एवं किसी के भय से वोट ना डालने की सलाह दी। अभियान के दौरान 100 गाँवो में लगभग 10 हजार मतदाताओं तक पंचायत स्तर में उनकी क्या भूमिका होती है यह बताने में अभियान सफल रहा है, साथ ही गांव में जल एवं स्वच्छता के मुददों पर भी पंचायत क्या कार्य कर सकती है इसके बारे में समुदाय में व्यापक समझ को विकसित किया गया।

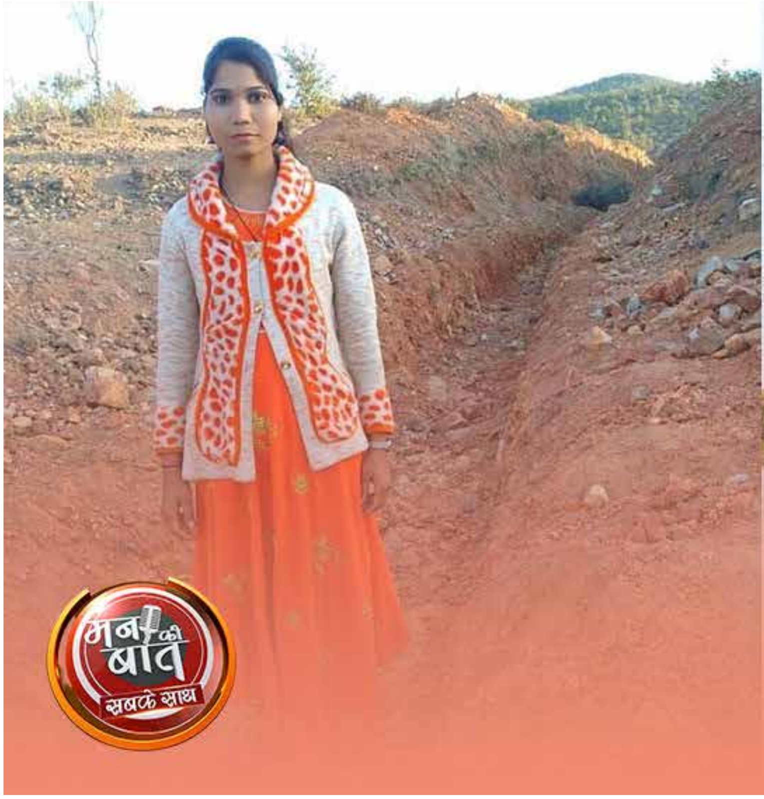

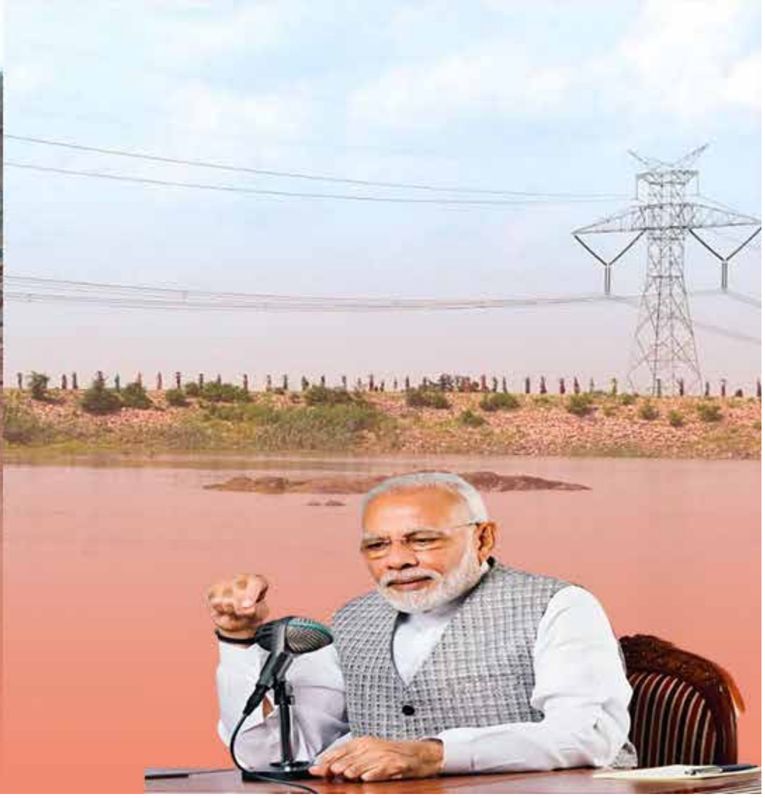

प्रधानमंत्री ने मन की बात में साझा की अगरौठा गांव की बबीता की कहानी

छतरपुर जनपद के बडामलहरा ब्लॉक का अग. रौठा गांव जल संकटग्रस्त गांव के रूप में जाना जाता है। वर्ष 2010 में बुन्देलखण्ड पैकेज के माध्यम से 1 करोड की लागत से अगरौठा गांव में तालाब का निर्माण किया गया है। जिससे सिंचाई के लिए एक नहर निकाली गई। तालाब निर्माण के समय काफी ऊंचाई के बंध निर्माण तो कर दिये गये लेकिन तालाब में कैचमेंट एरिया ना होने कारण हजार मिलीमी. टर वर्षा होने के बाद भी यह तालाब पिछले 10 वर्षो में नहीं भरा, जिसके कारण तालाब का लाभ ग्रामीणों को नहीं मिल पा रहा था। अगरौठा गांव जंगल में स्थित है। 3 वर्ष पहले बुन्देलखण्ड में जल संरक्षण पर कार्य करने वाली परमार्थ संस्था द्वारा इस गांव में कार्य प्रारम्भ किया। गांववालों ने बताया कि उनके गांव में गम्भीर जल संकट है। जिसके कारण खरीफ की फसल तो वर्षा आधारित होने के कारण हो जाती है। रबी की फसल में सिंचाई का संकट हो जाता है। जिसके कारण गेंहू की फसल ठीक से नहीं हो पाती। खेती ना होने के कारण इस गांव में अत्यधिक पलायन भी है। इसको देखते हुए गांव के स्तर पर एक पानी पंचायत समिति का निर्माण किया गया। पानी पंचायत समिति एवं परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने मिलकर कम लागत के 3 चैकडेम, 2 आउटलेट, 5 कुआभ: ारण का कार्य किया। जिससे 44 किसानों को सिंचाई का फायदा मिला। गावं के एक इलाके में ही कुए का जल स्तर ऊपर आया।

पानी पंचायत समिति लगातार इस समस्या के समाधान के लिए अपनी बैठकों में चर्चा करती रही। इस वर्ष लॉकडा. उन के दौरान इस गांव में 100 से अधिक प्रवासीय मजदूर वापस आये थे। इन सबके साथ चर्चा के बाद गांव के लोगों ने अपने तालाब को ठीक करने का निश्चय किया। तालाब की प्रमुख समस्या तो जल भराव कम होना तथा सीपेज की थी। सबसे पहले पानी पंचायत ने परमार्थ समाजसेवी संस्थान के सहयोग से तालाब को सीपेज ठीक किया। वन विभाग के सहयोग से तालाब के बाहर से बहकर जाने वाले नाले के पानी को 117 मीटरलम्बी व 10 से 15 फीट नहर खोदकर व पहाडी काटकर इस तालाब में पानी लाया गया।

अगरौठा गांव की पानी पंचायत में बबीता राजपूत, मात्र 19 वर्ष की जो जल सहेली है, बबीता ने अपने गांव की 200 महिलाओं को अपने गांव में तालाब के पुनर्जीवन के लिए संगठित किया। इन महिलाओं ने श्रमदान करके 117 मीटर लम्बी व 10 से 15 फीट ऊचे पहाड को काटकर जंगल के पानी को एक नाला बनाकर अपने तालाब में लाने का भरसक प्रयास किया। इस बार बुन्देलखण्ड में बहुत कमजोर मानसून रहा है फिर भी यह विशाल जलाशय न्यूनतम वर्षा में भी अपनी पूरी भण्डारण क्षमता से भर गया था। गांव की महिलाओं ने न सिर्फ पहाड काटने का बल्कि पहाड के पुनः हरा–भरा करने के लिए सघन वृक्षारोपण किया। इस कार्य करने की अनुमति में वन विभाग के स्थानीय वन संरक्षक संजीव झा का विशेष सहयोग रहा। बबीता लगातार अपने गांव में जल संरक्षण के कार्य को जल सहेली के रूप में आगे बढाने के लिए प्रयासरत है। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में बुन्द. `लखण्ड के दूरस्थ पिछडे अगरौठा जिला छतरपुर के गांव में बबीता द्वारा किये जा रहे प्रयास को समूचे राष्ट्र से साझा किया।

परमार्थ संस्था के प्रमुख संजय सिंह कहते है कि यह पूरे बुन्देलखण्ड के लिए गौरव की बात है, कि एक अगरौठा जैसे पिछडे गांव की एक बहिन ने महिलाओं के संगठन के माध्यम से जो करके दिखाया, वह पूरे देश के लिए मिशाल बना। परमार्थ संस्थान की पूरी टीम ने हर वक्त बबीता सहित महिलाओं के हौसले को बढाये रखने के लिए हर सम्भव मदद की।

बबीता राजपूत बताती है कि इस तालाब से ना केवल उनके गांव में सिंचाई होगी बल्कि उनके पडोसी भेल्दा, चौधरी खेराभौयरा गांव में भी सिंचाई होगी।

नन्नी बताती है कितालाब में पानी रहने से आजीविका के कई संसाधन विकसित होगे।

पानी पंचायत के सदस्य रामरतन कहते है कि सरकार का इतने बडे बजट से तैयार किया गया, तालाब जो ठीक से भर नहीं पा रहा था। समुदाय के लोगों ने संस्था के साथ मिलकर इस तालाब में 300 हैक्टेयर क्षेत्रफल का पानी लाने का भागीरथ प्रयास किया गया। अब वह तालाब के आस–पास सघन वृक्षारोपण का कार्य करेगे। अपने गांव को पूरे बुन्देलखण्ड में जल ग्राम बनायेगे।

पंचायत में अच्छे प्रतिनिधि के चयन के लिए व्यापक मतदाता जागरूकता अभियान की आवश्यकता

बुंदेलखण्ड जल मंच की बैठक का आयोजन दिनांक 13 फरवरी को होटल यात्रिक मे किया गया, इस बैठक में बुन्देलखण्ड के विभिन्न अंचलों से सामाजिक कार्यकर्ता, विषय विशेषज्ञ एवं जल योद्धा, जल सहेलियों के द्वारा सहभागिता की गई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुये जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक श्री संजय सिंह ने कहा कि वर्तमान दौर में सबसे पहले पंचायत चुनावों में अच्छे प्रतिनिधियों का चयन हो जिससे गांव में विकास हो सके। साथ ही सरकार के द्वारा चलायी जा रही योजनाओं को लोगों तक कैसे पहुचाया जाये, यह सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। वर्तमान में सरकार के द्वारा पूरे देश में जल जीवन मिशन के कार्य को काफी तेजी से चलाया जा रहा है, जिसमें महिलाओं की सहभागिता बहुत कम है, इसे बढाने की आवश्यकता है। समुदाय स्तर पर सहभागिता को बढाये रखने के लिए पानी पंचायत की सक्रियता आवश्यकता है। गांव स्तर पर तैयार होने वाली कार्ययोजना में समुदाय का जुडाव आवश्यक है। जिसके लिए समुदाय को प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

राज्य संयोजक शिवानी के द्वारा जल जन जोडो अभियान के द्वारा आगामी पंचायत चुनाव मे पूरे बुन्देलखण्ड में वृहद जागरूकता यात्रा की कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा की जिसपर साथियों के द्वारा कार्ययोजना का निर्धारण किया गया। उन्होंने किसान समृद्धि योजना का लाभ किसानों को दिला रहे बुन्देलखण्ड जल मंच के सदस्यों से अभियान बारे में भी चर्चा की।

ललितपुर की अविधेश सेवा समिति से आये अवधेश कुमार ने कहा कि अगर हमें गांव के लोगों को संवेदित करना है तो हमें चुनाव की तारीख की घोषणा से पहले ही मतदाताओं के बीच जाकर जागरूकता करनी होगी, जिससे गांव में सामाजिक वैमनस्य भी नहीं बढेगा और हम अपनी बात रखने में भी सफल होगें।

ललितपुर के भूचेरा से आयी जल सहेली पुष्पा ने कहा कि गांव में हर बार चुनाव होते है तो प्रत्याशी वादा करकर वोट ले लेते और कोई काम नहीं करवाते है। इसलिए इस बार वह स्वयं चुनाव लडेगी।

सोशल चैंज फॉउण्डेशन के संस्थापक मस्तराम घोष ने कहा कि अटल भूजल योजना के क्रिय. ान्वयन के लिए मध्य प्रदेश में कार्य को आरम्भ कर दिया गया है, जल्द ही सामुदायिक कार्ययोजना को बनाया जाना है।

युवा विकास मंच, बबीना के संयोजक अमित त्रिपाठी ने कहा कि यह जरूरी नहीं है कि हम सभी गांव को एक साथ बदलाव लाये, पहले प्रत्येक व्यक्ति को एक गांव को मॉडल के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता है, जिसको देखकर अन्य गांव भी अपने–आप सशक्त होगे। बैठक का बाद निर्णय लिया गया कि किसानों को सम्मान निधि से जोडने हेतु लगातार रूप से अभियान चलाया जायेगा, जिसके लिए सम्मान निधि के पोर्टल पर जाकर गांववार सम्मान निधि पाने में क्या समस्या आ रही उसके निस्तारण का प्रयास किया जायेगा। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यलाय के मास कम्यूनिकेशन विभाग के साथ जुडकर जल जीवन मिशन पर 4 जिलों में अध्ययन किया जायेगा, जिससे यह देखने का प्रयास किया जायेगा कि समुदाय जल जीवन मिशन के बारे में क्या सोचता है। आगामी पंचायत चुनाव में सामुदायिक संगठन के जो भी लोग चुनाव लडना चाहते है, उनको जल जन जोडो अभियान के द्वारा आवेदन करने में सहयोग किया जायेगा एवं पंचायत चुनाव के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। जल जन जोडो अभियान के द्वारा पंचायत स्तर पर जागरूकता अभियान का आयोजन किया जायेगा, जिसमें साथी सामाजिक संगठन को जागरूकता के लिए सन्दर्भ सामग्री पहुचायी जायेगी। पंचायत चुनाव के सामुदायिक संगठन के साथ ही गांव का घोषणा पत्र तैयार करवाया जायेगा।

जल जन जोडो अभियान के बारे में

जल-जन-जोडो अभियान जल निकायों, नदी पुनर्जीवन, जल संरक्षण, पर कार्य करने वाला राष्ट्रव्यापी अभियान है। जिसका मुख्य उददेश्य पारम्परिक जल स्रोतों के संरक्षण, नदी पुर्नरुद्धार और जन सुरक्षा जैसे मुददे है। विगत 08 वर्षो में जल-जन-जोडो अभियान का प्रमुख उददेश्य राष्ट्रीय स्तर पर जल अधिकार कानून का निर्माण करना और नदी पुनर्जीवन के कार्यो को बढावा देना है। समाज के विभिन्न घटकों को जोड़ कर भारत को दुष्काल मुक्त बनाना अभियान का परम ध्येय है। 1500 से अधिक संस्थाये, व्यक्तिओ, 16 विश्वविद्यालय एवं तकनीकी संस्थाओ का अभियान से जुडाव है।

कार्यलय का पता– नजा हॉस्पिटल के पास दूसरी गली, शिवाजी नगर, झांसी (उ. प्र.)

Email: jaljanjodoabhiyan@gmail.com, parmarths@gmail.com

Website: www.parmarthindia.com

Phone: 0510-2321051 Mobile: 7054435087

घोषणा : इस न्यूज लेटर का प्रकाशन जल-जन-जोडो अभियान द्वारा किया जा रहा है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख-विचार लेखकों के है। इन विचारों से बीएमजेड तथा वेल्टहंगरहिल्फे का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।